कुमारों की प्रतिज्ञा

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा आज हम अपने सौ प्रतिशत मन से समस्त ब्राह्मण परिवार के सामने आप से यह प्रतिज्ञा करते हैं कि माया, रावण से भी विकराल रूप रखकर क्यों न आ जाये, विघ्न व समस्यायें हिमालय से भी बड़ी क्यों न आ जायें, सगे-सम्बन्धी सुनामी से भी बड़ा तूफान क्यों न खड़ा कर दें, कर्म भोग चीन की दीवार जैसी बाधा क्यों न बन जाये परन्तु हम अपनी पवित्रता रूपी अनमोल निधि को किसी भी हालत में हिलने नहीं देंगे। बल्कि इस पवित्रता की खुशबू से सारे विश्व को सुंगधित कर पाक बना देंगे।

आपने हमें अपने आश्रय में लेकर हमारे जीवन को आश्रम से जोड़ ऋषि कुमार बना दिया। अब इस जीवन को तपस्या की अग्नि द्वारा सनत कुमार बनाकर सारे जहान को रावण के चंगूल से मुक्त करवा देंगे, स्वतंत्र बना कर ही छोड़ेंगे, मर जायेंगे, मिट जायेंगे पर हम आपसे वादा करते हैं कि जब तक इस कार्य को पूरा नहीं कर लेते तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।

आज हम आपके सामने यह भी प्रण कर रहे हैं कि आज के बाद काम, क्रोध, कुटिल, कठोरता, कुमार्ग, कुविचार, कुदृष्टि, कुकर्म वाली जीवन की ओर संकल्प की दृष्टि भी नहीं करेंगे। क्योंकि यह जीवन आज से आपकी अमानत है। आज से इसका स्वामित्व एकमेव आप को ही है, आप इसे जहाँ चाहें, जब चाहें, जैसे चाहें यूज करें। इसका एक अंश भी हम आपकी श्रीमत बिना कहीं भी नहीं लगायेंगे। साथ-साथ विकारी-व्यसनी, विलासी-आलसी, मनमौजी जीवन त्याग कर तपस्वी जीवन बनाकर सदा संगठन में रह एक मत, सदा सहयोगी, एकव्रता होकर रहेंगे।

बाबा! आपके उपकारों का एहसान हम इस जन्म में तो क्या, हजार जन्म लेकर भी नहीं चुका पायेंगे, पर आपके फरमान को ईमानदारी और वफादारी से पूरा करने का वचन देते हैं। जब तक पूरा नहीं करेंगे तब तक हमारे लिए आराम हराम है। आपका दिया हुआ कार्य ही अब हमारा लक्ष्य, उद्देश्य, मंजिल, स्वप्न जीवन हो गया है, इसके लिए हमें कुछ भी सहन करना पड़े, त्यागना पड़े तो हम मरने के लिए खुशी-खुशी तैयार हैं।

इस अश्वमेध यज्ञ की रक्षा करने के लिए हमें चाहे ध्रुव की तरह तपस्या करनी पड़े या मीरा की तरह जहर का प्याला पीना पड़े या सीता की तरह अग्नि परीक्षा देनी पड़े तो भी हम हँसते-हँसते कैसी भी परीक्षायें आये उसमें पास ही नहीं बल्कि पास विद ऑनर होके ही दिखायेंगे।

हम तुम्हें देंगे क्या बाबा, हम कहाँ देने के काबिल,
ये तुम्हारी ही इनायत, जो किया इतना मुकम्मिल।
और हम चाहे नहीं कुछ, और है हमको न पाना,
एक बस दिल में रहो तुम.तुमको अपना प्राण माना।

ओम्शान्ति